पाकिस्तानी पंजाबी मुसलमान तथा पंजाबी बोली

जस्टिस सय्यद आसिफ शाहकार, स्वीडन

जब मैं आज के पाकिस्तानी मुसलमान पंजाबी के बारे में सोचता हूं तो मुझे पहले तो इस पर इतना गुस्सा आता है कि मैं पागल हो जाता हूं और फिर मेरा यह गुस्सा बढ़ता-बढ़ता इस इंतहा पर पहुंच जाता है। फिर यह गुस्सा आहिस्ता-आहिस्ता तरस और रहम की शक्ल में तबदील होना शुरू हो जाता है और मुझे यह पाकिस्तानी मुसलमान पंजाबी मजलूम और बेचारा लगने लगता है तथा मेरी आंखों में पानी आ जाता है।

पंजाब की तकसीम का बदतरीन निशाना यही पंजाबी बना है। इसके साथ महा धोखा हुआ है, सिर्फ धोखा ही नहीं बल्कि उसको बेवकूफ बनाकर उसका सब कुछ लूट लिया गया है। सबसे पहले इससे उसकी पहचान और बुनियाद लूट ली गई। उसकी पहचान इसके लिए एक ताना और मनाही बना दी गई है और यह अपनी पहचान से ऐसे छिपता फिरता है जैसे यह चोर हो। इसका सारा पंजाबी वजूद शर्म की अलामत बन गया है। इसके साथ चाहे जितना मर्जी सिर खपा लो, यह सुनता ही नहीं। यह तोते की तरह पाकिस्तान और उर्दू की रट लगाए जाएगा।

सिर्फ यह ही नहीं कि यह अपनी पहचान और बुनियाद गुम कर चुका है बल्कि यह पंजाब, पंजाबीयत और पंजाबी जबान का सबसे बड़ा दुश्मन भी बन चुका है। हाल ही में जब पश्चिमी पंजाब को और बांटा गया तो इसकी मुखालफत करने की जगह पंजाबी ने खुद असैम्बलियों में बैठ कर इसके टुकड़े किए। इसमें और भारतीय पंजाबी हिन्दू में कोई ज्यादा फर्क नहीं है, ये एक-दूसरे की फोटोकापी लगते हैं।

पंजाब में यह न तो अपने आप को पंजाबी कहता है और न ही अपने विरसे को मानने की हिम्मत करता है। पाकिस्तान के दूसरे सूबों में उसको मजबूरी से पंजाबी बनना पड़ता है क्योंकि वहां उसकी पंजाबी होना इस पर जबरदस्ती ठूंसा जाता है, वह भी एक गाली की तरह। जैसे अमरीका में कोई काला अमरीकी नीग्रो कहलाता है और इंगलैंड में कोई पाकिस्तानी पाकी बास्टर्ड, इसी तरह पाकिस्तान के दूसरे सूबों में पंजाबी होना नीग्रो और पाकी बास्टर्ड के बराबर है।

पंजाबी होने के नाते इसके अपने घर पंजाब में इसके साथ बाकायदा एक व्यवस्था के तहत नसली भेदभाव का जो भी सलूक किया जाता है, यह उसको हंस कर कबूल कर लेता है। पंजाब के स्कूलों में पंजाबी पढ़ाई जानी तो अलग बात रह गई, वहां तो यह मना है। पंजाबी बोलने पर बच्चों को सजा दी जाती है। लाहौर और दूसरे बड़े शहरों में बहुत से कारोबारी और सरकारी अदारों में पंजाबी बोलना मना है। हद तो यह है कि मध्यम और निचले तबके के घरों में नौकरों के लिए भी पंजाबी बोलना सख्ती से मना है। लगभग हर वह पंजाबी, जो चार जमातें पढ़ लेता है या उसके पास चार पैसे आ जाते हैं तो वह पहला काम यह करता है कि पंजाबी को घर से निकाल कर बाहर फैंकता है।

आज का नाम निहाद पढ़ा-लिखा पंजाबी अपनी मातृ भाषा बोलने से ऐसे खौफजदा है जैसे कि यह कोई बहुत बड़ा पाप या जुर्म हो। इस सारे नाटक का सबसे ज्यादा दिलचस्प पहलू यह है कि वह पंजाबी, जो उर्दू बोल कर यू.पी. और बिहार के मुहाजिरों की खुशामद करता है, यू.पी. और बिहार का यह मुहाजिर उसको गले लगाकर शाबाश देने की बजाय इस पर थूकता है, उसको नफरत के साथ देखता है। इसके साथ बिल्कुल इस तरह का नस्ली भेदभाव का सलूक करता है, जैसे कल गोरे अमरीकी अपने काले गुलामों के साथ करते थे।

पाकिस्तानी पंजाबी उर्दू के साथ इस हद तक चिपक चुका है कि जब यह बाहर के देशों में आकर रहने लगता है तो वहां भी अपने बच्चों के साथ उर्दू बोलता है। इसके अलावा यहां कौन सा यू.पी. और बिहार का मुहाजिर डंडा लेकर बैठा है जो पंजाबी बोलने पर आपके सिर पर डंडा मारेगा। वे इस बात का जवाब नहीं देते। पंजाब में आज पंजाबी या तो देहातों में रह गई है या शहरों के गरीब और अनपढ़ घरों में। लाहौर और दूसरे शहरों में अदीब और दानिशवर, जो पंजाबी जबान के चबूतरे बना कर बैठे हैं, उनकी कारकर्दगी को भी फर्शी सलाम। इनमें से कोई पंजाबी के नाम पर मजहबी फिरका बनाकर बैठा है, कोई दूसरों पर इल्जाम लगा रहा है। ये असली पंजाबी हैं। मिल-जुल कर बैठने की जगह इनका सारा जोर एक-दूसरे के साथ लड़ने पर लगता है। लाहौर में पंजाबी के लिए मुजाहरा होता है तो 10-12 करोड़ के देश पंजाब से कुल 10 लोग इकट्ठे होते हैं।

अब सोचने वाली बात यह है कि किसी साम्राज्यवादी कालोनी में साम्राज्यवादी हाकिम जबरदस्ती जनता को साम्राज्यवादी बोली बोलने पर मजबूर करे या किसी मुल्क की बड़ी जबान बोलने वाली कौम किसी छोटी कौम के लोगों को अपनी जबान से मना करे तो अलग बात है लेकिन पाकिस्तान की तो सब से बड़ी जबान पंजाबी है और यहां कोई साम्राज्यवादी हाकिम भी नहीं लेकिन फिर भी पाकिस्तानी पंजाबी अपनी जबान छोड़ रहा है। यह शायद पूरी दुनिया में अकेली मिसाल है कि एक आजाद मुल्क की सबसे बड़ी कौम अपनी मर्जी से न सिर्फ अपनी बोली छोड़कर एक अनजानी और छोटी बोली बोलना शुरू कर रही है बल्कि अपनी मातृ भाषा के साथ जबरदस्त दुश्मनी भी कर रही है। ये कुछ मिसालें आटे में नमक के बराबर हैं, अगर इस मसले पर खुल कर बात की जाए तो शायद पूरी एक लाइब्रेरी बन जाए।

पाकिस्तानी पंजाबी का ऐसा व्यवहार क्यों है? तकसीम से पहले अगरचे अंग्रेज ने पंजाब में जबरदस्ती उर्दू लागू की हुई थी मगर पंजाबी मुसलमान फिर भी पंजाबी ही था। वह बतौर पंजाबी हिन्दुओं, सिखों की तरह पंजाब यूनियनिस्ट पार्टी के झंडे तले इकट्ठा था। न तो वह हिन्दुस्तान की तकसीम चाहता था और न ही पंजाब की। जैसे एक मुर्गी अपने परों में चूजों को छुपा कर उनको चील से बचाती है, इसी तरह सर छोटू राम सब पंजाबियों को बांटू और भ्रष्ट मजहब की चीलों से बचा कर बैठा था। इनमें कोई हिन्दू, कोई सिख और कोई मुसलमान नहीं था, सब पंजाबी थे। जब बाकी हिन्दुस्तान में लोगों को मजहब के नाम पर बांटा जा रहा था, उस वक्त पंजाब में सर छोटू राम की वजह से पंजाबी अभी तक इकट्ठे थे। सर छोटू राम के मरने के बाद यह पार्टी नाइत्तिफाकी और टूट-फूट का शिकार हो गई जिससे कांग्रेस, अकाली दल और मुस्लिम लीग को मौका मिल गया और उन्होंने पंजाबियों को मजहब के नाम पर बांटना शुरू कर दिया। मेरा यह दावा है कि अगर सर छोटू राम जिंदा रहता तो आज हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का नक्शा और होता। न 10 लाख पंजाबी मरते और न ही 4 करोड़ पंजाबी उजड़ कर जाते। इस नक्शे में एक पंजाब होना था। (क्रमशः)

asifshahkar@gmail.com

पंजाब केसरी
जालंधर, R.N.I. Regd. No. 10117/65,
पोस्टल रजि. नं. Pb/JL-192/2012-14
फोन जालन्धर हैड ऑफिस:
0181-5067200/1, 5030000/1, 2280104/7.
फैक्स : 0181-2280111-14, 5063750.
विज्ञापन : 0181-5067249, 5067206.
ई-मेल : advtpk@gmail.com
advt@thepunjabkesari.com
फैक्स : 0181-5012101, 5030036.
सर्कुलेशन : 0181-5067251, 98151-65655.
मोडम : 0181-5075490, 5012104.
E-mail : news@thepunjabkesari.com
स्वत्वाधिकारी हिंद समाचार लिमिटेड सिविल लाइन्स, जालन्धर के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक विजय कुमार चोपड़ा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, स्वदेश प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित तथा सिविल लाइन्स, जालन्धर से प्रकाशित।

http://epaper.punjabkesari.in/punjab/fullstory/32948982_247549 (20/09/2012)